14

टी० एस० इलियट : परम्परा का आग्रह

टी० एस० इलियट आधुनिक युग का प्रख्यात कवि, आलोचक और चिंतक है। उसने आधुनिक कविता को एक नया मोड़ दिया और काव्यालोचन के संबंध में नयी मान्यतायें प्रस्तुत की। कवि होने के नाते उसकी आलोचना का और भी महत्व है। उसका कहना था कि कवि ही सच्चा आलोचक हो सकता है, किंतु उसका यह कथन निर्भ्रांति नहीं माना जा सकता। आलोचना के नाम पर कवियों ने जो कुछ लिखा है उससे यह भी सिद्ध नहीं होता। वे प्राय: जो कुछ विचार व्यक्त करते हैं या करते रहे हैं उनकी संगति उनके अपने काव्य के साथ बैठ ही जाती है। दूसरे प्रकार की कविताओं पर उन सिद्धांतों को लागू नहीं किया जा सकता। कहना न होगा कि वह "द म्यूजिक आफ पोइट्री" में एक स्थान पर जो कुछ लिखता है उसका भावार्थ यह है कि—"कवि की समीक्षात्मक रचनाओं में, जैसा कि अतीत में भी देखा गया है, अपनी लिखी गई या लिखी जा रही रचनाओं का समर्थन करता है अथवा भावी रचनाओं का फार्मूला तैयार करता है। युवाकाल में वह ज्यादा क्रियाशील रहता है। वह अतीत की रचनाओं को अपने काव्य के संदर्भ में देखता है। जिनसे कुछ सीखता है उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता है और जो लोग उसके मेल में नहीं आते उनके प्रति वह उदासीनता व्यक्त करता है। ऐसा करते समय यदि वह अत्युक्तिमूलक हो उठे तो अस्वाभाविक नहीं है। वह अपने सिद्धांतों में एक ही प्रकार के अनुभव का विश्लेषण करता है। अत: उसके सिद्धांतों को उसकी रचना के संदर्भ में ही लेना चाहिए।" आलोचनात्मक विचारों को व्यक्त करते हुए इलियट की दृष्टि में बराबर उसकी अपनी कविता रही है इसलिए उसकी आलोचना की सीमाएं हैं। फिर भी उसके आलोचनात्मक सिद्धांत अपनी मौलिकता के कारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। इसलिए आलोचक के रूप में भी वह उतना ही प्रतिष्ठित है जितना कवि के रूप में।

वस्तुतः वह स्वच्छंदतावादी सिद्धांतों के विरोध में आभिजात्यवादी सिद्धांतों को लेकर आया। स्वच्छंदतावादी कवियों और आलोचकों ने काव्य को

आत्माभिव्यक्ति माना था। आत्म का तात्पर्य है वैयक्तिकता : अभिव्यक्ति का अर्थ स्वतः स्फूर्त अभिव्यंजना। वर्ड्सवर्थ ने काव्य के संबंध में कहा है कि वह शक्तिशाली अनुभूतियों का सहज स्फुरण है। काव्य के नियम कवियों की आकांक्षाओं और संवेदनाओं से निर्धारित होते हैं। आभिजात्यवादी कविताओं के ह्रासोन्मुखी हो जाने के बाद कुछ दिनों तक स्वच्छंदतावादी कवि में नवीनता और ताजगी दिखाई पड़ी। लेकिन बाद में कम शक्तिशाली कवियों के हाथ में पड़कर उसकी चमक खो गयी और आत्माभिव्यक्ति की आवाज लुप्त हो गयी। इलियट ने स्वच्छंदतावादी काव्य-दृष्टि के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने स्वच्छंदतावादियों के इस कथन से, कि मनुष्य के व्यक्तित्व में असीम संभावनाएं दिखायी पड़ती हैं, इनकार कर दिया। ह्यूम की तरह उसका भी कहना था कि मनुष्य का व्यक्तित्व सीमित होता है। 'आफ्टर स्ट्रेंज गॉड्स' में इलियट ने लारेंस के संबंध में लिखते हुए कहा है कि उसकी आंतरिक ज्योति उसका मार्गदर्शन करा रही थी। उसके विचार से आंतरिक ज्योति अत्यंत अविश्वसनीय और धोखेबाज मार्गदर्शक है। अपने 'फंक्शन ऑव क्रिटिसिज्म' नाम के निबंध में भी वह आंतरिक आवाज को पुराना सिद्धांत मानकर खारिज कर देता है। अगर आलोचक का लक्ष्य उन वस्तुनिष्ठ प्रतिमानों की खोज करना है जिनके आधार पर कला का मूल्यांकन किया जा सकता है, तो कवि की आंतरिक आवाज को बहिष्कृत करना ही होगा।

आलोचक का कर्त्तव्य है कि वह ऐसी वस्तुनिष्ठ सत्ता की खोज करे जो कवियों को परिपक्व काव्य-निर्माण की प्रेरणा दे सके। इसके लिए जरूरी होगा कि कवि अपने व्यक्तित्व से दूर हटकर सार्वभौमता की अभिव्यक्ति करे। परिपक्व होने के लिए आवश्यक है कि कवि सामूहिकता का अथवा परंपरा का ध्यान रखे। एक व्यक्ति के मानस की अपेक्षा परंपरा से प्राप्त मानस कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इस तथ्य को उसने अपने सुप्रसिद्ध निबंध 'परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा' (ट्रेडिशन एण्ड इंडिविजुअल टैलेंट) में अच्छी तरह विश्लेषित किया है।

इलियट के पहले साहित्यिक आलोचना के दो प्रमुख संस्थान थे—प्रभाववादी और प्रत्ययवादी (अबस्ट्रेक्ट क्रिटिसिज्म)। प्रभाववादी समीक्षा में समीक्षक काव्यकृति के प्रति अपनी अनुक्रियाओं (रेस्पांसेज) की अभिव्यक्ति करते हैं। उनकी दृष्टि में काव्य-समीक्षा के लिए सौंदर्यवादी संवेदना पर्याप्त है। किसी प्रकार के पांडित्य और साहित्यिक अनुशासन के लिए वहां पर कोई गुंजाइश नहीं है।

इलियट ने दोनों प्रकार की आलोचनाओं पर गहरा प्रहार किया। सन् 1920 में उसके निबंधों का एक संग्रह 'द सैक्रेड वुड' नाम से प्रकाशित हुआ। इन

Scanned with CamScanner

निबंधों में समीक्षा संबंधी अनेक प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है। पहले दो निबंधों—"द परफेक्ट क्रिटिक" और "द इमपरफेक्ट क्रिटिक"—में प्रभाववादी और प्रत्ययवादी आलोचना का खंडन किया गया है। "द परफेक्ट क्रिटिक" के आरंभ में ही मैथ्यू आर्नल्ड और प्रभाववादी आलोचना का प्रतिवाद दिखायी पड़ता है। आर्नल्ड को वह आलोचक न कहकर आलोचना का प्रचारक कहता है। उसकी दृष्टि में आर्थर साइमंस शुद्ध प्रभाववादी आलोचक है। प्रभाव के आधार पर आलोचना करना संभव नहीं है क्योंकि इसके माध्यम से कुछ सौंदर्यवादी रायों का इजहार होकर रह जाता है। एक भावुक व्यक्ति में कोई काव्यकृति वैयक्तिक संवेगों को उत्पन्न करती है। वैयक्तिक संवेगों को विश्लेषित करने वाला व्यक्ति पूर्ण आलोचक नहीं माना जा सकता। साइमंस अपनी प्रतिक्रियाओं को काव्यात्मक गद्य में लिखता था।

प्रत्ययवादी आलोचक स्वयं काव्य पर विचार न करके काव्यगत विचारों का अंकन करते हैं। केवल विचारों से संबंध रखने वाले प्रश्नों को उठाकर काव्य की आलोचना संभव नहीं है। इस प्रक्रिया में काव्यगत संवेग और अनुभूति दोनों को छोड़ दिया जाता है।

इलियट काव्यकृति से प्राप्त प्रभावों को नियमानुबंधित करने का समर्थक है। ऐसा करने से आलोचक को वस्तुनिष्ठ होना ही पड़ता है। वह अरस्तू को इस तरह का शक्तिशाली आलोचक मानता है। आधुनिक युग में उसे यह क्षमता फ्रांसीसी आलोचक रेमी० डी० गोरमांट में मिली। प्रभाववादी आलोचक की सीमा अनुभूति है तो बौद्धिक आलोचक की सीमा विचार। पर इलियट काव्य के आंतरिक अनुभवों का विश्लेषण आवश्यक समझता है। वस्तुनिष्ठता, नियमानुबद्धता ऐसे गुण हैं जो उसके अभिजात्य को संकेतित करते हैं। वह राजनीति में राजतन्त्रवादी (रायलिस्ट), धर्म में आंग्लकैथोलिक और साहित्य में अभिजात्यवादी था। यह स्वयं उसकी घोषणा थी। उसके राजनीतिक मतवाद और धार्मिक विश्वासों का चाहे कितना भी विरोध किया जाय किंतु उससे उसकी अभिजातीय मनोवृत्ति और भी पुष्ट होती है। यद्यपि अभिजातवाद के लिए वैसा राजनीतिक-धार्मिक मतवाद न अनिवार्य है न आवश्यक।

निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत—परंपरा और आभिजात्य

पहले कहा जा चुका है कि इलियट स्वच्छंदतावाद का विरोधी था। स्वच्छंदतावादियों ने काव्य में व्यक्तित्व के प्रतिफलन पर विशेष बल दिया है किंतु इलियट ठीक विरोधी स्वर में कहता है—"कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं करता" वह केवल माध्यम होता है। उस माध्यम में ही अनेक प्रभाव और अनुभव अप्रत्याशित तथा विचित्र ढंग से समन्वित होते हैं। जो प्रभाव और अनुभव

व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं काव्य में उनका कोई स्थान नहीं हो सकता है और जो काव्य में अभिव्यक्त होते हैं वे कवि व्यक्तित्व में नगण्य हो सकते हैं।"

इस उद्धरण से दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली यह कि कवि माध्यम भर है और दूसरी यह कि उस माध्यम में ही अनेक प्रकार के अनुभवों का सामंजस्य घटित होता है। इसे स्पष्ट करने के लिए इलियट ने एक विज्ञान-सम्मत उदाहरण दिया है—"यदि आक्सीजन और सल्फर डाई आक्साइड से भरे कमरे में आप प्लैटिनम का एक टुकड़ा डाल दें तो दोनों सल्फर ऐसिड में बदल जायेंगे। परंतु प्लैटिनम निर्विकार रहेगा। यह संयोग तभी घटित होता है जब प्लैटिनम मौजूद हो। लेकिन इस प्रक्रिया से वह स्वयं प्रभावित नहीं होता। कलाकार का मन प्लैटिनम के टुकड़े की भांति होता है।"

वह पुनः लिखता है—"परिवर्तन में आने वाला कैटेलिस्ट दो प्रकार के अनुभव प्रस्तुत करता है—संवेग (इमोशन) और संवेदना (फीलिंग)। प्रमाता कला के जिस प्रभाव का अनुभव करता है वह कला से इतर अनुभवों से भिन्न होता है। वह एक अनुभव से निर्मित होता है अथवा अनेक अनुभवों के मिश्रण से। अंतिम परिणाम तक पहुंचने के लिए संवेदनाएं विशिष्ट शब्दों, मुहावरों या बिंबों में व्यक्त होती हैं या महान कविता सीधे बगैर किसी संवेग के भी निर्मित होती है : केवल संवेदनाओं द्वारा निर्मित होकर।" "कवि का मन अनेकानेक संवेदनाओं, मुहावरों, बिंबों को तब तक संगृहीत किए रखता है जब तक सभी तत्व एक नये मिश्रण (कंपाउंड) में बदल नहीं जाते।"

जाहिर है कि कविता के दो तत्व हैं—संवेग और अनुभूति। विचार बोध आदि उसमें सम्मिलित नहीं हैं। पर आगे उसी निबंध में वह कहता है—"यह पूरी कहानी नहीं है। कविता में बहुत कुछ सचेत और जानबूझकर किया जाता है। सामान्यतः निम्न श्रेणी का कवि जहां चेतन मन से काम लेता होता है। वहां अचेतन मन से काम लेता है। इन त्रुटियों के फलस्वरूप वह वैयक्तिक (पर्सनल) हो जाता है। कविता संवेगों की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि उनसे पलायन है, वह व्यक्तित्व का प्रतिफलन नहीं है किंतु उससे भागना है। किंतु जिनके पास संवेग और व्यक्तित्व है, वे ही लोग इससे पलायन का अर्थ समझ सकते हैं।"

इन उद्धरणों में विचित्र अन्तर्विरोध दिखाई देता है। एक ओर वह कवि के मन को प्लैटिनम के टुकड़े की भांति निर्विकार मानकर रचना-प्रक्रिया को अचेतन मन से जोड़ता है दूसरी ओर उसमें चेतन मन के क्रिया-कलापों को भी समाविष्ट कर लेता है। प्रश्न उठता है कि कवि मानस को निर्विकार मानकर वह जहां निर्वैयक्तिकता का समर्थन करता है वहीं अचेतन प्रक्रिया रोमांटिक सिद्धान्तों का समर्थन करने लगती है।

कवि को प्लैटिनम धातु के टुकड़े की भांति मान लेना बहुत संगत नहीं प्रतीत

होता है। इस तरह से इलियट वैयक्तिकता का आत्यंतिक निषेध करता है। कवि के व्यक्तित्व को धातु के टुकड़े की भांति जड़ नहीं माना जा सकता है। वह सचेत ढंग से क्रियाशील रहता है। इसे लेकर इलियट पर दो प्रकार के आरोप लगाये गये हैं। क्या वह कवि मानस को अचेतन ढंग से क्रियाशील मानकर रोमैंटिक सिद्धांतों का ही समर्थन नहीं कर रहा है? क्या व्यक्तित्व का निषेध रोमैंटिक सिद्धांतों के अतिशय विरोध के कारण अतिरेकपूर्ण नहीं है? ये दोनों आरोप स्वयं एक दूसरे के विरुद्ध हैं। रोमैंटिक सिद्धांतों का इलियट ने इतने रूपों और इतनी जगहों में विरोध किया है कि पहला आरोप नि:सार सिद्ध होता है।

जहां तक दूसरे आरोप का संबंध है वह निश्चय ही विचारणीय है। व्यक्तित्व का आत्यंतिक विरोध रोमैंटिक सिद्धांतों की प्रतिक्रिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है। प्लैटिनम एक जड़ पदार्थ है और कविमानस चेतन पदार्थ। इसलिए रचना प्रक्रिया में कवि मानस को सर्वथा अचेतन नहीं माना जा सकता। यह उपमा भ्रांतिपूर्ण है।

इलियट निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत को परंपरा से जोड़ता है। परंपरा के संबंध में उसने 'आफ्टर स्ट्रेंज गॉड्स' में लिखा है—'परंपरा से मेरा अभिप्राय उन सभी हेबिचुअल कार्यों, आदतों, रीतिरिवाजों, धार्मिक कृत्यों से है, जिनसे एक ही स्थान में रहने वाले एक समुदाय के व्यक्तियों के रक्तगत संबंध व्यक्त होते हैं।' स्पष्ट है कि परंपरा का संबंध संस्कृति से है। उसका मत है कि कवि को परंपरा का ज्ञान श्रमपूर्वक अर्जित करना चाहिए। यह परंपरा विरासत में नहीं मिलती। कवि को अपने युग के प्रति ही नहीं बल्कि समूची काव्य परंपरा के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है।

वह परंपरा को रूढ़ियों से अलग मानता है। परंपरा परिवर्तमान और विकसनशील होती है। वह एक ऐतिहासिक चेतना है जो शाश्वत भी है और परिवर्तनशील कवि के लिए आवश्यक है कि वह अपने को पूरी परंपरा से जोड़े। इस तरह वह संपूर्ण जातीय जीवन को आत्मसात् कर लेता है। इस प्रकार से वह अपने अहं का—वैयक्तिकता का—विसर्जन कर सकता है। अहं का यह विसर्जन कवि के व्यक्तित्व को अधिक मूल्यवान बना देता है। परंपरा का उल्लेख करते हुए इलियट ने कहा है कि कवि को समस्त यूरोपीय परंपरा का ध्यान रखना चाहिए। यूरोपीय परंपरा का उल्लेख वह इसलिए करता है क्योंकि अमेरिका की कोई लंबी साहित्यिक परंपरा नहीं बन पायी है। इस परंपरा को आत्मसात् करने पर ही कवि का मानस प्रौढ़ होता है। व्यक्तिगत मस्तिष्क की अपेक्षा सामूहिक मस्तिष्क अधिक विश्वसनीय, सार्वजनीन और मूल्यवान होता है। उसका तात्पर्य यह है कि परंपरा के प्रकाश में कवि एक ओर अपने अहं का विसर्जन करता है तो दूसरी ओर अपने को प्रौढ़ बनाता है और बहुत कुछ सीखता है।

निर्वैयक्तिकता और परंपरा का संबंध-सृजन-प्रक्रिया में व्यक्तित्व पर कोई प्रकाश नहीं डालता। इतना तो निश्चित है कि अपने प्रारंभिक वक्तव्यों में इलियट व्यक्तित्व की क्रियाशीलता के संबंध में प्रायः कुछ नहीं कहता। लेकिन आगे चलकर उसके विचारों में परिवर्तन होता है। सन् 1940 में यीट्स के संबंध मे एक आलोचनात्मक भाषण देते हुए उसने कहा है—'मैंने अपने आरंभ के निबन्धों में कलागत निर्वैयक्तिकता को स्वीकार किया है। लेकिन ईट्स की उत्तरकालीन कविताओं को जिसमें उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति हुई है श्रेष्ठ मानने के कारण मैं अपने उस पूर्वमत का विरोध कर रहा हूं। हो सकता है, कि मैंने उस समय अपनी बात को ठीक ढंग से व्यक्त न किया हो या उस विचार को मैंने प्रौढ़ रूप से न ग्रहण किया हो किन्तु अब मैं सोचता हूं कि इस विषय में दूसरे ढंग से विचार किया जाना चाहिए।

उसने निर्वैयक्तिकता के दो रूप माने। एक निर्वैयक्तिकता स्वाभाविक होती है अर्थात् यह निर्वैयक्तिकता केवल शिल्पी की निर्वैयक्तिकता होती है दूसरी निर्वैयक्तिकता वह होती है जिसे प्रौढ़ कलाकार अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध करता है। काव्य में दूसरे प्रकार की निर्वैयक्तिकता ही श्लाघ्य है। विलियम बटलर यीट्स के संबंध में उसने कहा है—'यह आश्चर्य की बात है कि यीट्स पहले प्रकार का शिल्पी होकर भी दूसरे प्रकार का महान् कवि बन गया। बात यह नहीं है कि वह पहले से भिन्न व्यक्ति हो गया। यह कहा जा चुका है कि यौनावस्था के उत्कट भावों का उसने अनुभव किया था। इन अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए उसे परिपक्वता की प्रतीक्षा करनी पड़ी।' इससे यह स्पष्ट है कि इलियट काव्य में वैयक्तिकता के महत्त्वपूर्ण योग को स्वीकार करता है।

सन् 1953 में इलियट ने 'कविता के तीन स्वर' शीर्षक भाषण में कहा है—'अपने चरित्रों को कवि अपना जो अंश प्रदान करता है वह उस पात्र के जीवन का बीज हो सकता है, और साथ ही यदि कोई पात्र कवि को अपने में रमा लेने में समर्थ है तो वह अपने निर्माण के लिए कवि के व्यक्तित्व में निहित क्षमताओं को क्रियाशील बना देता है। मेरा विश्वास है कि कवि अपने पात्रों को अपना कुछ निजी अंश अवश्य देता है किन्तु मेरा यह भी विश्वास है कि यह अपने निर्मित पात्रों द्वारा स्वयं प्रभावित होता है।'

अपने सुप्रसिद्ध निबंध 'परंपरा और व्यक्तिगत प्रज्ञा' में उसने कवि को प्लैटिनम की तरह माध्यम भर माना था किंतु जैसा कि उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है उसने अपने मत में परिवर्तन कर लिया। वस्तुत: इलियट का मंतव्य यह था कि वैयक्तिकता का प्राधान्य कविता की श्रेष्ठता के आगे प्रश्न वाचक चिह्न लगा देता है। निर्वैयक्तिकता में उसके अतिशय निजीपन का परिहार आवश्यक है। ऐसा करके ही कवि तटस्थ भाव से सार्वजनीन भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है।

Scanned with CamScanner

अपने इसी मत के कारण वह आभिजात्य या क्लासिक कला का पोषक माना जाता है।

वस्तुनिष्ठ समीकरण (आब्जेक्टिव कोरिलेटिव)

निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत को उसने फॉरमूला बद्ध करते हुए एक नये सिद्धांत का उल्लेख किया है जिसका नाम है वस्तुनिष्ठ समीकरण उसने 'हैमलेट और उसकी समस्याएं' में लिखा है—'संवेगों को कला में अभिव्यक्त करने का एक मात्र तरीका है वस्तुनिष्ठ समीकरण को प्राप्त करना। दूसरे शब्दों में वस्तुओं; स्थितियों, घटनाओं की श्रृंखला को इस ढंग से संयोजित करना कि वे विशिष्ट संवेगों से सबद्ध होकर अभिव्यक्त हो सकें'''।'

यह सिद्धांत कृति संरचना पर जोर देता है। कवि अपने संवेगों को पाठकों तक संप्रेषित करने के लिए वस्तुओं, स्थितियों और घटनाओं की श्रृंखला का चुनाव करता है। और इन्हीं के माध्यम से संवेगों का संप्रेषण हो पाता है। कवि को जो कुछ कहना होता है वह इन माध्यमों के कारण ठोस रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। इस दृष्टि से विचार करने पर शेक्सपियर का 'हैमलेट' उसे त्रुटिपूर्ण मालूम पड़ता है। उसके मतानुसार हैमलेट की मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करने के लिए शेक्सपीयर को अपेक्षित समीकृत वस्तुएं उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। कला की दृष्टि से वह असफल रचना है।

वस्तुनिष्ठ समीकरण का सिद्धांत फ्रांसीसी प्रतीकवादियों से प्रभावित है। प्रतीकवादियों का कहना था कि काव्य सीधे भावाभिव्यक्ति नहीं कर सकता। भावों या संवेगों को आहुत (इवोक) किया जाता है, अभिव्यक्त नहीं। बादलेयर का कहना था कि रूप, रस, गंध, शब्द स्पर्श को आहूत करने वाली बहुत-सी वस्तुएं दूसरे क्षेत्रों में प्राप्त हो जायेंगी। मेलार्मे ने कहा है कि कविता शब्द है अर्थात् उसमें अर्थगत रागात्मकता और सांकेतिकता होती है। पाउंड ने भी सांकेतिकता का समर्थन किया है।

पर एलिसियो विवास ने उसके इस सिद्धांत का विरोध किया है। इलियट का अभिप्राय है कि उसे उस विशिष्ट संवेग का पहले ही से ज्ञान था जिसके लिए उसने हैमलेट को वस्तु के रूप में चुना था। नाटक की सफलता के लिए जरूरी है कि पाठक भी उसी तरह के भाव का अनुभव करे। विवास का कथन है कि यह सब शब्दों के माध्यम से ही किया जा सकता है। विवास के अनुसार पाठक या श्रोता कवि के संवेग के साथ तादात्म्य स्थापित नहीं कर सकता। काव्य-रचना के आरंभ में कवि जिन संवेगों को लेकर रचना करता है वह उनमें कम या अधिक भी अभिव्यक्त करता है। उसे 'संवेग' शब्द पर भी आपत्ति है क्योंकि काव्य का सारा

आयोजन केवल संवेगों को लेकर ही नहीं होता।

यहीं पर भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण पर भी विचार कर लेना चाहिए। वस्तुतः इलियट ने जिस वस्तुगत समीकरण का उल्लेख किया है वह बहुत कुछ 'विभाव' से मिलता है। आचार्य शुक्ल ने काव्य में विभावों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया है। विभाव के कारण वस्तुनिष्ठता स्वयमेव आ जाती है। किंतु तादात्म्य का उल्लेख करते हुए शुक्लजी ने आश्रय के साथ पाठक के तादात्म्य की स्थिति स्वीकार की है, कहीं-कहीं वह कवि के साथ भी तादात्म्य करता है। डॉ० नगेन्द्र ने आचार्य शुक्ल के द्वैत का परिहार करते हुए कहा है कि पाठक या श्रोता का तादात्म्य कवि की अनुभूति के साथ होता है। अनुभूति को लेकर भी वहीं कठिनाई होती है। पाठक किस अनुभूति के साथ तादात्म्य स्थापित करेगा? वह अनुभूति के साथ जिसे लेकर काव्य का समारंभ किया गया था? वह अनुभूति तो ज्यों की त्यों कविता में अभिव्यक्त नहीं हो सकती। या उस अनुभूति के साथ जो कविता में व्यक्त है? सच तो यह है कि पाठक उसी को उपलब्ध करता है। दूसरा प्रश्न होगा कि कवि अनुभूति के अतिरिक्त भी तो कुछ व्यक्त करता है। क्या उसके साथ पाठक का तादात्म्य नहीं होता?

'संवेग' और 'अनुभूति' दोनों शब्दों के प्रयोग में अव्याप्ति दोष प्रतीत होता है। अतः समस्त काव्य-व्यापार के साथ ही तादात्म्य की स्थिति स्वीकार की जा सकती है। संवेग और अनुभूति पर ऐकांतिक रूप से जोर देने का मतलब रोमैंटिक दृष्टिकोण पर बल देना है। इलियट रोमांस-विरोधी होते हुए भी इससे बच नहीं पाया है*।

रैन्सम और विंटर ने भी इलियट का तीव्र विरोध किया है। रैन्सम के विचार से वह अत्यधिक मनोविज्ञानवादी है, रागात्मक अनुभवों से ज्यादा संबद्ध है, संज्ञानात्मक अनुभवों से कम। उसका आभिजात्यवाद पर्याप्त अभिजातीय नहीं है, इलियट का यह कहना कि किन्हीं अर्थों में कविता की अपनी जिंदगी होती है, विंटर को मान्य नहीं है। इस तरह कवि 'आटोमेटन' बन जाता है। कवि अपने अनुभवों को तर्क-सम्मत ढंग से समझने की कोशिश करता है। अपनी समझ या बोध के फलस्वरूप अपने संवेगों या भावों को अभ्युद्देश्यात्मक (मोटिवेटेड) बनाता है। कवि काव्य को नैतिक मूल्य प्रदान करता है, इसलिए काव्य को उसे पूर्ण नियंत्रण में रखना पड़ता है। उसे अपने मन और अनुभूति के समान शब्द-समीकरण रखना पर्याप्त नहीं है बल्कि मानसिक स्थितियों और अनुभूतियों के संबंध में निर्णय लेना पड़ता है। विंटर कवि के निर्णय और नियंत्रण पर इतना अधिक जोर देता है कि रचना-प्रक्रिया को देखते हुए यह शक्य नहीं प्रतीत होता। विवास का कथन अधिक सही मालूम पड़ता है कि कवि अपने कथन की प्रक्रिया में ही अपने कथ्य की तलाश करता है। विंटर का 'मोटिव' सिद्धांत एक प्रकार से वस्तुगत समीकरण

अपने इसी मत के कारण वह अभिजात्य या क्लासिक कला का पोषक माना जाता है।

वस्तुनिष्ठ समीकरण (आब्जेक्टिव कोरिलेटिव)

निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत को उसने फॉर्मूला बद्ध करते हुए एक नये सिद्धांत का उल्लेख किया है जिसका नाम है वस्तुनिष्ठ समीकरण उसने 'हैमलेट और उसकी समस्याएं' में लिखा है—संवेगों को कला में अभिव्यक्त करने का एक मात्र तरीका है वस्तुनिष्ठ समीकरण को प्राप्त करना। दूसरे शब्दों में वस्तुओं, स्थितियों, घटनाओं की शृंखला को इस ढंग से संयोजित करना कि वे विशिष्ट संवेगों से सबद्ध होकर अभिव्यक्त हो सकें...1

यह सिद्धांत कृति संरचना पर जोर देता है। कवि अपने संवेगों को पाठकों तक संप्रेषित करने के लिए वस्तुओं, स्थितियों और घटनाओं की शृंखला का चुनाव करता है। और इन्हीं के माध्यम से संवेगों का संप्रेषण हो पाता है। कवि को जो कुछ महसूस होता है वह इन माध्यमों के कारण ठोस रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। इस दृष्टि से विचार करने पर शेक्सपियर का 'हैमलेट' उसे त्रुटिपूर्ण मालूम पड़ता है। उसके मतानुसार हैमलेट की मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करने के लिए शेक्सपीयर को अपेक्षित संयोजित वस्तुएं उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। कला की दृष्टि से यह असफल रचना है।

वस्तुनिष्ठ समीकरण का सिद्धांत फ्रांसीसी प्रतीकवादियों से प्रभावित है। प्रतीकवादियों का कहना था कि काव्य सीधे भावाभिव्यक्ति नहीं कर सकता। भावों या संवेगों को आहूत (इवोक) किया जाता है, अभिव्यक्त नहीं। बादलेयर का कहना था कि रूप, रस, गंध, शब्द स्पर्श को आहूत करने वाली बहुत-सी वस्तुएं दूसरे क्षेत्रों से प्राप्त हो जायेंगी। मेलार्मे ने कहा है कि कविता शब्द है अर्थात् उसमें संकेत, रहस्यात्मकता और सांकेतिकता होती है। पाउंड ने भी सांकेतिकता का समर्थन किया है।

पर एलिसिओ विवास ने उसके इस सिद्धांत का विरोध किया है। इलियट का अभिप्राय है कि उसे एक विशेष संवेग का पहले ही से ज्ञान था जिसके लिए उसने हैमलेट को वस्तु के रूप में चुना था। पाठक की सफलता के लिए जरूरी है कि पाठक भी उसी वस्तु के साथ का अनुभव करे। विवास का कथन है कि यह सब शब्दों के माध्यम से ही किया जा सकता है। विवास के अनुसार पाठक या श्रोता कवि के संवेग के साथ तादात्म्य स्थापित नहीं कर सकता। काव्य-रचना के आरंभ में कवि जिन संवेगों को लेकर रचना करता है वह उससे कम या अधिक भी अभिव्यक्त करता है। उसे 'संवेग' शब्द पर भी आपत्ति है क्योंकि काव्य का सारा

आयोजन केवल संवेगों को लेकर ही नहीं होता।

यहीं पर भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण पर भी विचार कर लेना चाहिए। वस्तुतः इलियट ने जिस वस्तुगत समीकरण का उल्लेख किया है वह बहुत कुछ 'विभाव' से मिलता है। आचार्य शुक्ल ने काव्य में विभावों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया है। विभाव के कारण वस्तुनिष्ठता स्वयमेव आ जाती है। किंतु तादात्म्य का उल्लेख करते हुए शुक्लजी ने आश्रय के साथ पाठक के तादात्म्य की स्थिति स्वीकार की है, कहीं-कहीं वह कवि के साथ भी तादात्म्य करता है। डॉ० नगेन्द्र ने आचार्य शुक्ल के द्वैत का परिहार करते हुए कहा है कि पाठक या श्रोता का तादात्म्य कवि की अनुभूति के साथ होता है। अनुभूति को लेकर भी यही कठिनाई होती है। पाठक किस अनुभूति के साथ तादात्म्य स्थापित करेगा? वह अनुभूति के साथ जिसे लेकर काव्य का समारंभ किया गया था? वह अनुभूति तो ज्यों की त्यों कविता में अभिव्यक्त नहीं हो सकती। या उस अनुभूति के साथ जो कविता में व्यक्त है? सच तो यह है कि पाठक उसी को उपलब्ध करता है। दूसरा प्रश्न होगा कि कवि अनुभूति के अतिरिक्त भी तो कुछ व्यक्त करता है। क्या उसके साथ पाठक का तादात्म्य नहीं होता?

'संवेग' और 'अनुभूति' दोनों शब्दों के प्रयोग में अव्याप्ति दोष प्रतीत होता है। अतः समस्त काव्य-व्यापार के साथ ही तादात्म्य की स्थिति स्वीकार की जा सकती है। संवेग और अनुभूति पर ऐकांतिक रूप से जोर देने का मतलब रोमैंटिक दृष्टिकोण पर बल देना है। इलियट रोमांस-विरोधी होते हुए भी इससे बच नहीं पाया है।

रैन्सम और विटर ने भी इलियट का तीव्र विरोध किया है। रैन्सम के विचार से वह अत्यधिक मनोविज्ञानवादी है, रागात्मक अनुभवों से ज्यादा संबद्ध है, ज्ञानात्मक अनुभवों से कम। उसका अभिजात्यवाद यथार्थ अभिजातीय नहीं है, इलियट का यह कहना कि किन्हीं अर्थों में कविता की अपनी जिंदगी होती है, विटर को मान्य नहीं है। इस तरह कवि 'आटोमेटन' बन जाता है। कवि अपने अनुभवों को तर्क-सम्मत ढंग से समझाने की कोशिश करता है। अपनी समझ या बोध के फलस्वरूप अपने संवेगों या भावों को अनुमोदनात्मक (मोटिवेटेड) बनाता है। कवि काव्य को नैतिक मूल्य प्रदान करता है, इसलिए काव्य को उसे पूर्ण नियंत्रण में रखना पड़ता है। उसे अपने मन और अनुभूति के मध्य वस्तुगत-समीकरण रखना पर्याप्त नहीं है बल्कि मानसिक स्थितियों और अनुभूतियों के संबंध में निर्णय देना पड़ता है। विटर कवि के निर्णय और नियंत्रण पर इतना अधिक जोर देता है कि रचना-प्रक्रिया को देखते हुए यह उचित नहीं प्रतीत होता। विवास का कथन उचित नहीं मालूम पड़ता है कि कवि अपने कथन की प्रक्रिया में ही अपने कथ्य की तलाश करता है। विटर का 'मोटिव' सिद्धांत एक प्रकार से वस्तुगत समीकरण

ही है। अपनी खामियों के बावजूद वस्तुनिष्ठ समीकरण का सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है। इलियट काव्य में संवेग या अनुभूति की ठोस अभिव्यक्ति मानता है। 'संवेग' शब्द से गलतफहमी हो सकती है लेकिन वस्तुनिष्ठ समीकरण के कारण वह निर्वैयक्तिक हो जाता है। दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि इलियट काव्य की समग्रता और संरचना पर जोर देता है जो भाषिक होती है। रूपकों, बिंबों आदि का महत्त्व काव्य की आंतरिक अनिवार्यता के रूप में ही है।

Scanned with CamScanner